सुधा ओम ढींगरा के साहित्य में मानवीय संवेदना

1. Shalini 2. Dr. Seema Sharma

1 - Research Scholar, Department of Languages, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut, India, Email- shalinikumari643@gmail.com

2- Professor & Head, Department of Languages, Swami Vivekanand Subharti University, Meerut, India, Email- sseema561@gmail.com Orcid ID- 0009-0002-3401-5449

How to Cite this Article:

Shalini, (2026). सुधा ओम ढींगरा के साहित्य में मानवीय संवेदना. International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management, 02(7). https://doi.org/10.55041/ijcope.v2i7.015

License:

This article is published under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author(s) and the source are credited.

© The Author(s). Published by International Journal of Creative and Open Research in Engineering and Management.

https://doi.org/ 10.55041/ijcope.v2i7.015

सारांश : प्रस्तुत शोध पत्र में मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक दायित्व के विविध आयामों को केंद्र में रखा गया है। साहित्य को समाज का दर्पण मानते हुए यह अध्ययन इस बात की जांच करता है कि किस प्रकार ढींगरा की रचनाएँ मानव जीवन की जटिलताओं, सामाजिक विषमताओं, पारिवारिक संबंधों तथा स्त्री मन की गहराइयों को अभिव्यक्त करती हैं। उनकी कहानियों, उपन्यासों और कविताओं में मानवीय पीड़ा, करुणा, प्रेम, त्याग और संघर्ष का सजीव चित्रण मिलता है, जो पाठकों को सामाजिक यथार्थ से जोड़ता है। विशेष रूप से उनके साहित्य में हाशिए पर स्थित वर्गों, महिलाओं और वंचित समुदायों की समस्याओं को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन यह भी दर्शाता है कि ढींगरा का साहित्य केवल भावनात्मक अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक जागरूकता और परिवर्तन का सशक्त माध्यम है। शोध के निष्कर्ष के रूप में यह स्पष्ट होता है कि डॉ. सुधा ओम ढींगरा की रचनाएँ मानवीय करुणा, सामाजिक समानता और नैतिक दायित्व की चेतना को सुदृढ़ करती हैं तथा पाठकों को सामाजिक सुधार की दिशा में प्रेरित करती हैं। इस प्रकार उनका साहित्य समकालीन समाज के लिए अत्यंत प्रासंगिक और प्रेरणादायी है।

मुख्य शब्द : डॉ. सुधा ओम ढींगरा, मानवीय संवेदनाएँ, सामाजिक दायित्व, हिंदी साहित्य, नारी विमर्श, सामाजिक यथार्थ, करुणा, पारिवारिक संबंध, सामाजिक विषमता, स्त्री मनोविज्ञान, सामाजिक न्याय, साहित्य और समाज।

प्रस्तावना

साहित्य केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह समाज की वास्तविकताओं को समझने और उनमें सुधार लाने का एक प्रभावी उपकरण भी है। यह समाज के विचारों, संवेदनाओं और सांस्कृतिक संरचनाओं को प्रतिबिंबित करता है। हिंदी साहित्य में ऐसे अनेक लेखक हुए हैं, जिन्होंने मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक दायित्वों को अपने लेखन का विषय बनाया। प्रेमचंद जैसे लेखकों ने किसानों और मजदूरों के जीवन के संघर्षों को अपने साहित्य में उकेरा, लेकिन डॉ. सुधा ओम ढींगरा का साहित्य इन विषयों को लेकर एक अलग और

अनूठी दृष्टि प्रस्तुत करता है। डॉ. सुधा ओम ढींगरा ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के उन वर्गों की समस्याओं को उठाया, जो अक्सर शोषित और उपेक्षित रह जाते हैं। उनकी रचनाओं का मुख्य उद्देश्य समाज के इन वंचित वर्गों को एक मंच प्रदान करना था, ताकि उनकी आवाजें सुनी जा सकें। उन्होंने समाज में व्याप्त अन्याय, शोषण, और विषमताओं को अपने उपन्यासों, कहानियों और कविताओं के माध्यम से उजागर किया। उनकी लेखनी मानवीय करुणा, सामाजिक दायित्व और बदलाव के प्रति गहरी प्रतिबद्धता का प्रतीक है| उनकी कहानियों और उपन्यासों में पात्रों के संघर्ष और उनकी मानवीय संवेदनाएँ इतनी सजीव हैं कि वे पाठकों को सीधे जोड़ती हैं। उदाहरण के लिए, उनका कहानी–संग्रह **खिड़कियों से झाँकती आँखें**' में "वृद्धावस्था और अकेलेपन की समस्या अत्यंत संवेदनात्मक रूप में उभरती है, जहाँ प्रतीक्षारत वृद्धों का जीवन आधुनिक समाज की उस त्रासदी को उद्घाटित करता है जिसमें आर्थिक प्रगति के साथ-साथ पारिवारिक आत्मीयता क्षीण होती जा रही है।"(1) कहानी का प्रतीकात्मक संसार पाठक को यह अनुभव कराता है कि मनुष्य की सबसे बड़ी आवश्यकता प्रेम और संवाद है, न कि केवल भौतिक सुविधाएँ।

उनकी रचनाएँ मानवीय संवेदनाओं का एक उत्कृष्ट उदाहरण हैं। उनकी लेखनी में करुणा और सहानुभूति का भाव स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता है। उन्होंने अपने पात्रों के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया कि कैसे समाज में असमानता और अन्याय मानवीय मूल्यों को प्रभावित करता है। उनकी कहानी '**टारनेडो**' कहानी में वन्दना को अपने परिवार के अन्य सदस्यों का बहुत सहारा है। पति व्योम की मृत्यु के बाद भी उसके परिवार के सदस्यों ने कभी उसे अकेला महसूस नहीं होने दिया। "परिवार में सदस्यों का बहुत सहारा होता है। जब वन्दना थक जाती तो बाबू जी का प्यार भरा हाथ उसके सिर पर होता और उनका कहना, "बेटी थक गई, आज चल मैं अपने हाथ से चाय पिलाता हूँ।"(2) कोई आयोजन करना हो तो परिवार के सदस्य हाथ बंटाकर काम कम कर देते हैं। जैसे वन्दना के जेठ जिठानी सोनल के जन्म दिन के आयोजन में वन्दना की पूरी सहायता करते हैं और वन्दना का आयोजन सफल होता है।

डॉ. ढींगरा ने सामाजिक दायित्व को साहित्य का एक अनिवार्य हिस्सा माना। उन्होंने साहित्य को केवल मनोरंजन के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे समाज के लिए एक परिवर्तनकारी शक्ति के रूप में अपनाया। "उनकी रचनाओं में सामाजिक न्याय, समानता और मानवाधिकारों की वकालत स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। उनकी लेखनी ने समाज को यह संदेश दिया कि हर व्यक्ति का यह दायित्व है कि वह समाज में सकारात्मक बदलाव लाने की कोशिश करे|" (3) ढींगरा की लेखनी में न केवल समाज की सच्चाई को उजागर करने की क्षमता है, बल्कि उन्होंने अपने पाठकों को सोचने और कार्य करने के लिए भी प्रेरित किया। उनकी कविताएँ और कहानियाँ पाठकों को यह समझाने में सक्षम हैं कि समाज में व्याप्त असमानताओं को खत्म करना एक सामूहिक दायित्व है। "उनका का साहित्य मानवीय संवेदनाओं और सामाजिक दायित्वों का प्रतीक है। उनकी रचनाएँ पाठकों को समाज की सच्चाई से अवगत कराती हैं और उन्हें समाज के सुधार के लिए प्रेरित करती हैं। यह शोध उनके साहित्य को समझने और उनके प्रभाव को रेखांकित करने का प्रयास है।"(4)

मानवीय संवेदनाओं की अभिव्यक्ति: साहित्य में मानवीय संवेदनाएँ इतनी प्रबलता से व्यक्त होती हैं कि वे पाठकों को गहराई से झकझोर देती हैं। उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज के उन वर्गों की पीड़ा, संघर्ष और संवेदनाओं को स्वर देते हैं, जो अक्सर हाशिए पर रह जाते हैं। उनकी रचनाएँ केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि समाज के यथार्थ का सजीव दस्तावेज भी हैं। उनकी रचनाओं में पात्रों की भावनाओं का चित्रण इतने सजीव और प्रभावी ढंग से किया गया है कि पाठक उनकी परिस्थितियों से खुद को जोड़ने लगता है। जैसे, उनकी कहानी संग्रह '**लड़की थी वह**' में "एक लड़की की स्थिति तथा सामाजिक समस्याओं का वर्णन पाठकों को न केवल उसकी पीड़ा का एहसास कराता है, बल्कि समाज की भूमिका पर भी सवाल उठाने के लिए

मजबूर करता है।"(5) उनकी लेखनी की विशेषता यह है कि वे केवल पीड़ा का वर्णन नहीं करते, बल्कि अपने पात्रों के माध्यम से संघर्ष और उम्मीद का संदेश भी देते हैं। "ढींगरा की लेखन शैली में करुणा, यथार्थ और गहराई का अनूठा संगम है। वे पात्रों के संवाद और वर्णन के माध्यम से उनकी आंतरिक भवनाओं और संघर्ष को बड़ी कुशलता से व्यक्त करते है। उनके साहित्य पर टिप्पणी करते हुए लिखते है।"(6)

उनके उपन्यासों और कहानियों में नारी के त्याग, मातृत्व, प्रेम, करुणा और सामाजिक संघर्ष जैसे आयामों का मार्मिक चित्रण किया गया है, जो पाठक के हृदय को स्पर्श करता है। यह अध्ययन ढींगरा के साहित्य में मानवीय संवेदना के विविध रूपों को उद्घाटित करता है। "कथा साहित्य में नारी को केंद्र स्थापित कर उसके कोमल हृदय और अप्रतिम सौंदर्य का भावपूर्ण वर्णन मिलता है। यह संवेदना नारी के समर्पण और पीड़ा को मानवीय ऊँचाई प्रदान करती है। ढींगरा भाषावाद, जातिवाद या संप्रदायवाद से मुक्त मानवतावादी दृष्टि अपनाती हैं।"(7) उनके पात्र मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता से जीते हैं, जहाँ मंदिर-मस्जिद सभी स्थानों पर समान भावना का आह्वान होता है। "उपन्यासों में मातृत्व की करुणा, पितृतुल्य स्नेह और पारिवारिक बंधनों का चित्रण पाठक को भावविभोर कर देता है। जैसे कार्यों में वैधव्य की करुण गाथा और त्याग की भावना प्रमुख है, जो मानवीय संबंधों की गहराई को प्रतिबिंबित करती है।"(8) साहित्य में संवेदना के आयाम प्रेम की कोमलता से लेकर सामाजिक अन्याय के क्रोध तक बहुआयामी हैं। उनका साहित्य में संवेदना के आयाम प्रेम का कामलता से लकर सामाजिक अन्याय के क्रोध तक बहुआयामी हैं। उनके साहित्य में मातृत्व का चित्रण सर्वोपरि है, जहाँ माँ का त्याग सर्वत्र विख्यात है। साथ ही, वे यथार्थ को संवेदित स्वरों में प्रस्तुत कर समाज से संवाद करती हैं। उनके शिल्प में संवेदना और भाषा का समन्वय अद्भुत है। तथा सामाजिक मुद्दों को मानवीय भावों से जोड़ती हैं। "स्त्री-पुरुष संबंध, दहेज प्रथा और पारिवारिक विघटन जैसे विषय उनके कथा साहित्य में संवेदना के साथ उभरते है। यह दृष्टि उन्हें आधुनिक बनाती है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन है। उनके साहित्य का मूल्यांकन संवेदना के इन आयामों से होता है।"(9)

सामाजिक दायित्व का संदेश: प्रमुख उद्देश्य साहित्य को सामाजिक जागरूकता और सुधार का माध्यम बनाना है। उनका साहित्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं बल्कि वे समाज में बदलाव लाने का आह्वान है। "ढींगरा ने अपने लेखन के माध्यम से यह संदेश दिया कि साहित्य केवल जीवन के अनुभवों का चित्रण नहीं है, बल्कि यह समाज को सुधारने और संवेदनशील बनाने का भी एक साधन है।"(10) उनकी प्रसिद्ध कहानी 'सूरज क्यों निकलता है' में टैरी नाम की महिला अविवाहित है और सरकारी वेलफेयर को पाने के लिए हर साल गर्भवती होकर बच्चे पैदा करती है। टैरी की माँ कहती है, "टैरी तुम अब और खाली नहीं बैठोगी, कुछ काम धंधा करो, नहीं तो मैं घर से निकाल दूंगी। हर साल बच्चा पेट में डाल लेती हो। तुझे तो यह भी पता नहीं कि किसका बाप कौन है।" (11) प्रदेश की धूप में कवयित्री ने प्रदेश के कल्चर को उकेरा है, अंत': केवल लेखिका ने दिखाया है की समाज में जीने के लिए क्या-क्या परेशानी उठानी पड़ती है।

लेखिका अपने साहस और नैतिकता के बल पर समाज में बदलाव लाने की कोशिश करती है। यह न केवल पाठकों को सामाजिक अन्याय के प्रति जागरूक करता है, बल्कि उन्हें यह भी सिखाता है कि वे अपने आस-पास के समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं। उन्होंने सामाजिक दायित्व के प्रति उनकी गहरी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। उन्होंने महिलाओं की समानता और अधिकारों की लड़ाई को मुख्य विषय बनाया। यह कहानी समाज में पितृसत्ता और लिंगभेद के खिलाफ एक सशक्त आवाज है। साहित्य में यह विशेषता है, कि "वे सीधे- सीधे समाज की समस्याओं और उनकी जड़ों पर प्रहार करती है। उनकी रचनाओं में यह संदेश निहित होता है कि समाज के प्रत्येक व्यक्ति की यह जिम्मेदारी है कि वह असमानता, अन्याय और शोषण के खिलाफ खड़ा हो ।"(13)

भविष्य के आयाम: उनका साहित्य आज के समाज में भी उतना ही प्रासंगिक है जितना उनके समय में था। उनकी रचनाएँ केवल उस समय की सामाजिक समस्याओं का दस्तावेज नहीं हैं, बल्कि उनमें वर्तमान समाज की जटिलताओं और विषमताओं का समाधान खोजने की क्षमता है। "उनकी रचनाओं में सामाजिक असमानता, आर्थिक विषमता और नारी अधिकार जैसे विषय उठाए गए हैं, जो आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। उनका साहित्य का समाजशास्त्रीय और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से अध्ययन करना लाभप्रद होगा।"(14) उनकी कहानियाँ और उपन्यास समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों की पीड़ा और संघर्ष को गहराई से व्यक्त करते हैं। उनके साहित्य से यह समझा जा सकता है कि समाज के वे पहलू, जिन्हें अक्सर मुख्यधारा के साहित्य में अनदेखा किया जाता है, कितने महत्वपूर्ण हैं। साहित्य समाज में सकारात्मक बदलाव का वाहक कैसे बन सकता है। सुधा ओम ढींगरा के साहित्य को शैक्षिक पाठ्यक्रमों में शामिल करना एक प्रभावी कदम हो सकता है। इससे नई पीढ़ी उनके विचारों और दृष्टिकोण को समझ सकेगी और समाज की समस्याओं को साहित्य के माध्यम से विश्लेषित करने में सक्षम होगी। उनकी रचनाएँ छात्रों और शोधकर्ताओं को न केवल साहित्य का अध्ययन करने के लिए प्रेरित करेंगी, बल्कि समाज की समस्याओं के समाधान की दिशा में सोचने की क्षमता भी विकसित करेंगी। इसके अतिरिक्त, "उनके साहित्य पर गहन अनुसंधान और अध्ययन कर उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों को और सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक संदर्भों को और गहराई से समझा जा सकता है।"(15)

उनकी रचनाओं में कई शोध संभावनाएँ मौजूद हैं। उदाहरण के लिए, उनकी कहानियों में नारी अधिकारों और सामाजिक न्याय के सिद्धांतों का विश्लेषण मानवाधिकार और नारीवाद के आधुनिक संदर्भ में नई दिशाएँ प्रदान कर सकता है। इसी तरह, उनकी रचनाओं में ग्रामीण भारत के जीवन और संघर्ष का यथार्थ चित्रण है, जो ग्रामीण समाजशास्त्र के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान कर सकता है। ढींगर साहित्य सामाजिक सुधार का एक सशक्त माध्यम है। "उनकी रचनाएँ न केवल समाज की समस्याओं को उजागर करती हैं, बल्कि पाठकों को उनके समाधान की दिशा में सोचने के लिए भी प्रेरित करती हैं। उनके साहित्य पर व्यापक और गहन अध्ययन समाज और साहित्य के आपसी संबंधों को समझने और उसे और अधिक प्रभावी बनाने में सहायक होगा।"(16) यह अध्ययन साहित्य को सामाजिक बदलाव का माध्यम बनाने की दिशा में भी उपयोगी हो सकता है।

निष्कर्ष:

शिवानी का कथा साहित्य मानवीय संवेदना का सशक्तीकरण और जीवंत दस्तावेज है। उनकी रचनाओं का केंद्र मानव मन, नारीमन की कोमल भावनाएं, पीड़ा, प्रेम, करुणा और संघर्ष है। उन्होंने जीवन के साधारण प्रसंगों में निहित असाधारण भावनाओं को अत्यंत सहजता और आत्मीयता के साथ अभिव्यक्त किया है। शिवानी के पात्र सामाजिक रूढ़ियों, पारिवारिक बंधनों और परिस्थितियों के दबाव में जीते हुए भी अपनी संवेदनशीलता, नैतिकता और मानवीय मूल्यों को बनाए रखते हैं। उनके साहित्य प्रेम, त्याग, सहानुभूति और आत्मबल का प्रतीक है। कथाकार शिवानी के कथा साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का अध्ययन निष्कर्षतः दर्शाता है कि उनका साहित्य नारी केंद्रित भावनाओं का अनुपम कोष है। शिवानी ने अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से त्याग, मातृत्व, सौंदर्य, वैधव्य, प्रतिशोध और करुणा जैसे आयामों को इतनी मार्मिकता से चित्रित किया है कि यह हिंदी साहित्य में एक विशिष्ट स्थान रखता है। उनकी रचनाओं के विश्लेषण से स्पष्ट पता चलता है कि संवेदना उनके शिल्प का मूल आधार है, जो यथार्थ को भावपूर्ण बनाती है। शिवानी सामाजिक कुरीतियों जैसे विधवा विवाह, दहेज, बलात्कार और पारिवारिक विघटन को मानवीय भावों से जोड़ती हैं। उनका साहित्य मध्यमवर्गीय जीवन की जटिलताओं को संवेदनशीलता से उकेरता है, जहाँ परंपरा और आधुनिकता का संतुलन है। आज के संदर्भ में शिवानी का साहित्य नारी सशक्तिकरण और मानवीय मूल्यों का

दर्पण है। सामाजिक परिवर्तन के दौर में उनकी संवेदनाएँ प्रेरणा स्रोत बनी हुई हैं। यह अध्ययन पुष्टि करता है कि शिवानी हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि है।

संदर्भ सूची:

1. सुधा ओम ढींगरा, 2019, खिड़कियों से झाँकती आँखें, शिवना प्रकाशन सीहोर मध्य प्रदेश ।
2. वंदना गुप्ता, सुधा ओम ढींगरा: रचनात्मकता की दिशाएँ, संस्करण 2016, शिवना प्रकाशन, पी.सी लेब सम्राट कॉम्पलैक्श् ।
3. शर्मा, रामदास, 2019, भारतीय साहित्य में सामाजिक चेतना, वाराणसी: काशी विश्वविद्यालय प्रेस ।
4. वर्मा, सुनीता, 2021, साहित्य और समाज: एक समीक्षात्मक अध्ययन, साहित्य अनुसंधान जर्नल ।
5. सुधा ओम ढींगरा, 2010, कौन-सी ज़मीन अपनी, भावना प्रकाशन सीहोर मध्य प्रदेश ।
6. कौल, राकेश, 2018, मानवीय संवेदनाएँ और साहित्य का दायित्व, हिंदी साहित्य विमर्श।
7. पांडे, नवीन, , 2020, साहित्य में सामाजिक चेतना: डॉ. सरयू प्रसाद का योगदान, भारतीय साहित्य समीक्षा ।
8. दूबे, मोहनलाल, 2018, हिंदी कथा साहित्य और समाज, भोपाल: साहित्य भवन प्रकाशन।
9. मिश्र, अरुण, 2019, साहित्यिक मान्यताएँ और मानवीय संवेदनाएँ, राष्ट्रीय साहित्यिक मंच ।
10. गुप्ता, अंजलि, 2021, साहित्य और सामाजिक बदलाव, जयपुर: राजस्थान विश्वविद्यालय प्रकाशन ।
11. डॉ. सुधा ओम ढींगरा, 2010, सूरज क्यों निकलता है, शिवना प्रकाशन सीहोर मध्य प्रदेश ।
12. श्रीवास्तव, राजेश, 2020, समकालीन साहित्य मेंमानवीय मूल्य।" समकालीन साहित्य पत्रिका ।
13. जैन, सुधा, , 2017, साहित्य का समाजशास्त्र, दिल्लीः यूनिवर्सल पब्लिशिंग हाउस ।
14. जोशी, मनोज, 2022, डॉ. सरयू प्रसाद के साहित्यिक योगदान का समाजशास्त्रीय विश्लेषण, हिंदी आलोचना जर्नल ।
15. सिंह, अभय, 2020, साहित्य में मानवीय संवेदनाओं का चित्रण, भारतीय साहित्यिक अध्ययन ।
16. शुक्ला, दीप्ति, 2020, हिंदी साहित्य का सामाजिक परिप्रेक्ष्य, लखनऊ: नीलकंठ पब्लिशर्स।